बाल समय रवि भक्षी लियो तब
तीनहुं लोक भयो अंधियारों ।

ताहि सो त्रास भयो जग को
यह संकट काहु सो जात न टारो ।

देवन आनि करी बिनती तब
छाड़ी दियो रवि कष्ट निवारो ।

को नहीं जानत है जग में कपि
संकटमोचन नाम तिहारो ।

बालि की त्रास कपीस बसैं गिरि
जात महाप्रभु पंथ निहारो ।

चौकिं महामुनि सांप दियो तब
चाहिए कौन बिचार बिचारो ।

कैद्विज रूप लिवाय महाप्रभु
सो तुम दास के सोक निवारो ।

को नहीं जानत है जग में कपि
संकटमोचन नाम तिहारो ।

अंगद के संग लेन गए सिय
खोज कापीस यह बैन उचारो ।

जीवत ना बचिहौ हम सो जु
बिना सुधि लाये इंहा पगु धारो ।

हेरि थके तट सिन्धु सबे तब लाए
सिया – सुधि प्राण उबारो ।

को नहीं जानत है जग में कपि
संकटमोचन नाम तिहारो ।

रावण त्रास दई सियो को सब
राक्षसी सों कहीं सोक निवारो ।

ताहि समय हनुमान महाप्रभु
जाए महा रचनीचर मारो ।

चाहत सीय असोक सों आगि सु
दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ।

को नहीं जानत है जग में कपि
संकटमोचन नाम तिहारो ।

बाण लग्यो उर लक्ष्मण के तब
प्राण तजे सुत रावन मारो ।

लै गृह वैद्य सुषेन समेत
तबै गिरि द्रोण सु बीर उपारो ।

आनि संजीवन हाथ दई तब
लछिमन के तुम प्रान उबारों

को नहीं जानत है जग में कपि
संकटमोचन नाम तिहारो ।

रावन जुद्व अज़ान कियो तब
नाग कि फांस सबै सिर डारो ।

श्रीरघुनाथ समेत सबै दल
मोह भयो यह संकट भारो ।

आनि खगेस तबै हनुमान जु
बंधन काटि सुत्रास निवारो ।

को नहीं जानत है जग में कपि
संकटमोचन नाम तिहारो ।

बंधु समेत जबै अहिरावन
लै रघुनाथ पाताल सिधारों ।

देबिन्ही पूजि भलि विधि सो बलि
देउ सबै मिलि मंत्र विचारो ।

जाए सहाय भयो तब ही
अहिरावण सैन्य समेत संहारो ।

को नहीं जानत है जग में कपि
संकटमोचन नाम तिहारो ।

काज किए बड़ देवन के तुम
बीर महाप्रभु देखि विचारो ।

कौन सो संकट मोर गरीब को
जो तुमसे नहीं जात है टारो ।

बेगि हरो हनुमान महाप्रभु
जो कछु संकट होय हमारो।

को नहीं जानत है जग में कपि
संकटमोचन नाम तिहारो ।
।। दोहा ।।

लाल देह लाली लसे,
अरु धरि लाल लंगूर
बज्र देह दानव दलन,
जय जय जय कपि सूर ।।

सियापति रामचन्द्र की जय,
पवनपुत्र हनुमान लला की जय ।।